International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 845-846

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 845-846
www.allresearchjournal.com
Received: 15-01-2017
Accepted: 16-02-2017

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ग्राम+पोस्टः भैंसवार, जिलाः सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ग्राम+पोस्टः भैंसवार, जिलाः सतना, मध्य प्रदेश, भारत

अनूप अषेष का प्रबंध काव्य–माण्डवी कथा

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

सारांश
माण्डवी कथा हिन्दी कविता की नवगीत विधा का पहला प्रबंध–काव्य है। किसी भी कृति का, किसी भी विधा में पहली प्रस्तुति का महत्व ऐतिहासिक होता है। अनूप अषेष ने कविता में कई नए अछूते प्रयोग किये हैं। बघेली बोली के प्रथम कवि के रूप में बघेली के भारतेन्दु होने का गौरव प्राप्त किया है। भारतीय साहित्य की बोलियों में नवगीत नहीं लिखे गये थे। अनूप अषेष ने बघेली बोली में इस विधा की शुरूआत की। इसी क्रम में खण्डकाव्य या प्रबंध काव्य में नवगीत शैली का प्रथम प्रयोग अनूप अषेष ने 'माण्डवी–कथा' में किया। माण्डवी जो त्रेतायुग में भगवान राम के अनुज महात्मा भरत की अध्यांगिनी होकर भारत भूमि में एक ऐसा अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो युगो–युगों तक इस महान त्यागिनी के तप को हृदय के अधपके घाव की तरह बेदनापूर्ण तरह से सभी पृथ्वी वासी महसूस करते रहेंगे। पूर्व के महान कवियों ने भगवान राम की पत्नी सीता एवं लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का पवित्र रचित्र का बखान तो बहुत किये हैं। लेकिन महात्मा भरत की भार्या माण्डवी के घावों को देखने एवं समझने की हिम्मत शायद किसी भी कवि में नहीं थी, जिसके कारण यह महान् तपस्विनी की गौरव गाथा को साहित्य जगत में स्थान नहीं मिल पाया था। इसी छोभ से द्रवित होकर नवगीत कवि अनूप अषेष ने रामायण की प्रमुख पात्र जो पर्दे के अंदर थी उसको साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान देने का सराहनीय प्रयास किया है – जो प्रबंध काव्य में माण्डवी कथा के रूप में प्रसिद्व है।

कूट शब्दः काव्य–माण्डवी कथा, बघेली बोली, भारतीय साहित्य, नारी चेतना

प्रस्तावना
अनूप अषेष मिथकों और प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भों की कथाओं में, पुरा–कथा की रक्षा करते हुए, उसके लोक संदर्भों के महत्व को वर्तमान का भी अंश–चरित्र सौंपते हुए, लिखना साधारण प्रतिभा के लिए संभव नहीं होता। इस कृति के माध्यम से अपने विशेष होने तथा त्रेता की महानतम नारी चेतना को वाणी देने का प्रमाण दिया है।

'तोड़ूंगी तो टूटेगी इस राज–भवन की डोरी, मस्तक पर आग बनेगी पुरखों के यज्ञ की रोरी।
मुझ जैसी सभी नारियाँ श्रहती हैं नहीं भवन में बस यही दूरियाँ खलतीं मुझको अभाव में धन में।'

राम के अनुज भरत की पत्नी माण्डवी त्रेता के इतिहास की ऐसी नारी पात्र है जो सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी भुला सी दी गई। उसके त्याग और पवित्र तपस्या को अनूप अषेष के पूर्व किसी कवि ने वाणी नहीं दी। अनूप अषेष जी ने अपने इस प्रबंध काव्य में सीता, उर्मिला और श्रुतिकीर्ति का महत्व स्थापित करते भी माण्डवी को इसमें उच्च स्थान दिया है। पति के पास रहते हुए भी जो पत्नी, पति से दूर, उपेक्षित, एक तपस्विनी का जीवन राम के अयोध्या लौटने तक जीती रही हो और पति भरत के जिसमें तनिक भी विक्षाह पैदा न हुआ हो, वह पत्नी किसी भी काल में महानतम् चरित्र की उदाहरण ही हो सकती।

'निकट अयोध्या के ही नंदी–ग्राम आश्रम रहने लगी माण्डवी अपने जोड जोड–क्रम।'

अनूप अषेष का यह काव्य आज के नारी विमर्श के कथित आक्रोश और आंदोलन का सटीक और सृजनात्मक उत्तर भी है। स्त्री को प्राचीन पारम्परिक उसका स्त्रीत्व और युगीन मर्यादा ही उसे स्त्रीत्व की संज्ञा दे सकता है। उत्तर आधुनिकता नहीं।

'पति के नाम कलंक लगे मेरे साथ अन्याय का, इतिहासों में नहीं चाहतीद पक्ष रखू मैं न्याय का।'

इस कृति में माण्डवी के महत्व को रघुनंदन श्रीराम ने स्वयं प्रतिपादित किया है। सम्राट और अग्रज के दायित्व के साथ। अनूप अषेष की मौलिक और यथार्थ कल्पना ने इस कृति को महत्तर उंचाई दी है।

'और माण्डवी स्वयं एक आदर्श है, उसमें नारी का, महान उत्कर्ष है।'
उसकी त्याग–तपस्या तुमको याद है।
सीता और उर्मिला उसके बाद है।'

इस प्रबंध कृति माण्डवी में आज की मानसिकता, लोक–भावना और सामाजिक संदर्भ अपने ताजा स्वरूप में मिलते हैं। राजा और जन के संदर्भ में पारस्परिक स्थापना उसके साथ आज भी अधुनातन और छद्म क्रांतिदर्शिता की कुचेष्टा से दूर है यह त्रेता की माण्डवी। यह भद्र है, शालीन है।

'पत्नी की मूक समर्पण पति को करके रीती।
जितना बीती अपने में उतना उनको जीती।'
'पति के विश्वास जगाना पत्नी की होती पूजा।
मंदिर मन के ही भीतर बाहर देव न दूजा।'

आज के इस अकविता समय में माण्डवी–कथा कृति भारतीय कविता और भारतीय स्त्री के पक्ष में खड़ी अनुपम कृति है। नवगीत कविता के व्यापक संदर्भों की गवाह है। महाकाव्य और खण्डकाव्य के सूखे को यह कम करती है। माण्डवी कथा अनूप अषेष की बड़ी कविता है।
'माण्डवी कथा' में यद्यपि आत्मा उन्हीं नवगीतों की है जो 'हम अपनी खबरों के भीतर' आदि संकलनों में व्याप्त है।

'निष्ठा की आग में जलकर वेदी की तपन में तपकर
कुंदन–सी निखर गयी हूँ प्रिय के रंग में रंगकर।'

नवगीत विधा में लिखा गया हिन्दी का यह पहला प्रबंध काव्य है, स्त्री–विमर्श की बौद्विक सम सापेक्ष चर्चाओं के विह्वल दर्शकों के बहुत पहले बिना उत्तेजित घोषणाओं के एक छोटे से गांव में अनूप अषेष ने इस प्रबंध काव्य को साधना के स्तर पर लिखा है।

'जब तक कार्य न पूरा होगा तब तक यहीं रहूँगा, जन के
और धर्म के हित में हंसकर कष्ट सहूँगा।'

अनूप अषेष के चिंतन ने वर्तमान से निककर भूत और भविष्यत् को भी समेटना चाहा है और दूसरा यह कि चेतना ने सामाजिक यथार्थ की आर्थिक सीमाओं को तोड़कर दार्शनिक आकाश को छूने की गति पकड़ी है। इन दोनों तत्वों के समावेश से उनकी प्रकाशनाधीन कृतियां उनके नवगीतों के निश्चित ही नये आयाम देगी तथा उनके वैचारिक धरातल के क्षेत्र को दूर–दूर तक फैलायेगी। इन कृतियों में गेयता, संगीतात्मकता तथा छंद और लय के प्रति अनूप जी का लगाव और उसे निभाने की क्षमता निश्चित रूप से संदेह से परे है।

मानवीय–रूपा नारी का कर्म, पहन न पायी वह आक्रोशी चर्म,
यातना–जयी का प्रस्तावित परिवेष, सौंपा भविष्य को नारी का
मन वेष।'

भारतीय नारियों का चरित्र तो बहुत ही पवित्र एवं उत्तम है। उनमें भी त्याग की मूर्ति के रूप में उस नारी का साहित्यकारों ने अपने साहित्य में स्थान देकर अमर कर दिया है। जिनमें से होकर ममता का बांध लबालब दिखाई देता हुआ संसार को आत्मीयता के साथ सुख प्रदान करता है। अपनी जीवन की कठिनाईयों को ऐसी नारियां सहजता के साथ सामना करके विजय प्राप्त करती है।

'नारी का यश लौटेगा जब क्रांन्ति–बीज बोएगी, जो सड़ा रूप
है उसका वह खुद उसको धोएगी।
आस्थाएं बन जाती है पत्थर के रेखाओं की, सोचा विकल्प हो
कोई नथ हिलती बाधाओं की।'

अनूप अषेष जी ने माण्डवी के उस चारित्रिक पक्ष को उजागर किया है जो राजभवन में सुखों के बीच रहने वाली रानी अपने पति भरत के उच्च विचारों एवं आदर्शों के कारण वह भी अपनी कुरवानी देने में पीछे नहीं रहती है। प्रजा के समान ही अपने को मानते हुए राजा (स्वामी) के लिए आदर्शों की झड़ी लगा देती है। जोकि ऐसी परिस्थति में नारियों की स्थिति किंकर्तव्य विमूढ़ होती है।

'ऐसे में भरत का आना भी भान नहीं हो पाया, माण्डवी–?
नाम सम्बोंधन का अर्थ कहीं टकराया।
भरत सोचते मन में यह ध्यान कहाँ खोया है इस गंध भरे
उपवन में क्या अवचेतना सोया है।'

संदर्भ सूची

1. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–19 ।
2. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–76 ।
3. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–05 ।
4. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–72 ।
5. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–116 ।
6. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं.–20 ।
7. माण्डवी कथा–प्रबंधकाव्य–अनूप अषेष–पृ.क्रं–21 ।